कारण और परिणामों को भी स्पष्ट करता है। उदाहरण के लिए - अपराध-दर और गरीबी के बीच सम्बन्ध को समाजशास्त्रीय विश्लेषण के द्वारा समझाया जाता है।

→ 5. क्या है? की व्याख्या :- समाजशास्त्र चिजों को वास्तविक रूप में प्रस्तुत करता है। कोई चिज़ अच्छी या बुरी नहीं होती बल्कि एक objective रूप में यह समझाया जाता है कि वस्तुतः वह क्या है?

→ 6. तथ्यों का सत्यापन :- अध्ययन में प्राप्त तथ्यों का परीक्षण और सत्यापन किया जा सकता है। दोहराए गए अध्ययन और प्रयोगों से उनकी सत्यता की पुष्टि की जाती है।

→ 7. भविष्यवाणी की संभावना :- जैसे-जैसे समाजशास्त्र में ज्ञान और अनुभव बढ़ता है, वैसे-वैसे सामाजिक घटनाओं की भविष्यवाणी भी संभव हो जाती है। उदाहरण के लिए - जनसंख्या-वृद्धि, शहरीकरण या सामाजिक परिवर्तन की प्रवृत्तियों का अनुमान लगाया जा सकता है।

→ निष्कर्ष :-

समाजशास्त्र का स्वरूप वैज्ञानिक है, यह तथ्यों अवलोकन, विश्लेषण और व्याख्या कर के समाज की वास्तविक प्रकृति को समझने में सहायता करता है।

by :-

Dr. Sanjeet Prakash.